”नेपाल का नेवारी संगीत: एक अनुसंधानात्मक विवेचन”

”Nepal ka Newari Sangeet: Ek Anusandhanatmak Vivechan”

Summary

To

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF

BARODA FOR THE AWARD OF THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

MUSIC-VOCAL

BY

MOHAN SHOVA MAHARJAN

UNDER THE GUIDENCE

OF

Dr. RAJESH KELKAR

DEPARTMENT OF INDIAN CLASSICAL MUSIC-VOCAL

FACULTY OF PERFORMING ARTS

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

VADODARA-390001

2018-2022

Registration Date: 31/01/2018

Registration No.: FOPA/74

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध नेपाल देश में निवास करने वाले नेवारी जाति के संगीत के ऊपर प्रस्तुत किया गया है। इस शोध में ज्यादातर काठमांडू जिला में गाया जाने वाले संगीत का अधिक समावेश करने का प्रयत्न किया गया है। नेपाल देश एशिया महादीप के मध्य भाग में अवस्थित एक स्वतंत्र और प्राचीन राष्ट्र है जो विशाल देश चीन एवं भारत के बीच में अवस्थित सर्वभौम राष्ट्र है। छोटा देश होते हुए भी नेपाल में विभिन्न जाति, विभिन्न भाषा तथा संस्कृति की विविधता पायी जाती है। नेपाल निवासी विभिन्न जातियों में से नेवार जाति भी एक है जो नेपाल देश के राजधानी शहर काठमांडू में ज्यादातर निवास करते हैं। नेवारी जाति को आदिवासी के रूप में माना गया है जिसकी प्राचीन समय से अलग पहचान है। नेवारी जाति को पूरे देश में कला, संस्कृति, संगीत, परंपरा, त्यौहार-पर्व इत्यादि में उच्च स्थान प्राप्त है। यह परंपरा प्राचीन समय से लेकर वर्तमान में भी देखने को मिलती है। देखा जाए तो नेवारी संस्कृति में संगीत पक्ष अथाह सागर की तरह भरपूर देखने को मिलता है। संगीत और त्यौहार-पर्व का एक अटूट संबंध बना हुआ है। प्राचीन काल से नेवारी जाति के पेशे को देखा जाए तो मुख्य रूप से खेती तथा व्यापार माना गया है। यह जाति कृषि क्षेत्र में व्यस्तता के बावजूद अपनी सांस्कृतिक परंपरा को एक जुट होकर वर्तमान समय तक मजबूत रूप में बाधकर रखने में सफल है। संगीत के क्षेत्र में गायन, वादन तथा नृत्य तीनों को महत्व दिया गया है। गायन में अनेक प्रकार की गायन शैली को गाया जाता है। हरेक पर्व, जात्रा, विभिन्न ऋतु इत्यादि के आधार पर भगवान की आराधना तथा लोक गीत उसी अनुरूप वाद्य वादन के साथ बजाया जाता है। इस शोध में शोधार्थिनी द्वारा नेवारी संगीत के महत्व को जानकार इस विषय में शोध करने का प्रयास किया गया है। नेवारी संगीत में प्रयुक्त गायन शैलियां, गायन प्रस्तुतीकरण, वाद्य वादन का ढांचा एवं बोल, त्यौहार पर्वों का महत्व, भाषा-बोली इत्यादि को इकत्र करने का प्रयास किया गया है।

इस शोध के निष्कर्ष को देखा जाए तो नेवारी संगीत एक लोक संगीत प्रकार है जिसका महत्व केवल अपनी जाति तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह संगीत सम्पूर्ण देश की आन बान शान बना हुआ है। कला, संगीत एवं संस्कृति क्षेत्र में अपने देश का गौरव बढ़ाने में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। शोधार्थिनी के अनुसार नेवारी संगीत में क्रियात्मक पक्ष की तुलना में शास्त्र पक्ष अल्प पाया गया है इसलिए इस संगीत के क्रियात्मक पक्ष के साथ साथ शास्त्र पक्ष को एकत्र करने का प्रयास किया गया जिससे नेवारी संगीत का भण्डार भरने में मदद मिल सके।

शोधार्थिनी द्वारा इस शोध को पाँच अध्याय में बाँटा गया है। छठा अध्याय निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध के लिए उपलब्ध विभिन्न पुस्तकें, साक्षात्कार, प्रत्रिकाएं, मेला-पर्वों में प्रत्यक्ष सहभागी इत्यादि का प्रयोग शोधार्थिनी द्वारा किया गया है।

प्रथम अध्याय : नेपाल का संक्षिप्त परिचय(सांस्कृतिक एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि)

प्रथम अध्याय में मुख्य रूप में नेपाल का परिचय और सभी क्षेत्रों की संस्कृति एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया गया है। नेपाल के परिचय में सर्वप्रथम नेपाल शब्द की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है जिसके लिए विभिन्न आधार जैसे स्थलगत, धार्मिक, भाषागत तथा जाति के आधार के माध्यम से वर्णन किया गया है। इसके पश्चात नेपाल के विभिन्न काल जैसे प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हो चुकी शासन प्रणाली, उनके समय में हुए संगीत के विकासक्रम एवं वर्तमान स्वरूप इत्यादि की चर्चा की गई है। उसके बाद नेपाल के तीनों प्रदेश हिमाल, पहाड़ और तराई क्षेत्र का वर्णन किया गया| तीनों क्षेत्र में भौगोलिक स्थिति से लेकर रहन-सहन, भाषा-बोली इत्यादि की चर्चा की गयी है। तीनों प्रदेशों के परिचय के पश्चात प्रत्येक प्रदेश की जतियों की संस्कृति एवं संगीत के बारे में बताया गया है। अलग अलग जतियों के गीत एवं वाद्यों का प्रयोग के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। साथ में कुछ प्रचलित गीतों को भातखण्डे स्वरलिपि के आनुरूप लिपिबद्ध कर प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय : नेवारी संगीत की उत्पत्ति एवं विकास

इस अध्याय में मुख्य रूप से शोध विषय को उजागर किया गया है। इस अध्याय में नेवारी जाति का परिचय दिया गया है। जिसके अंतर्गत नेवारी शब्द की उत्पत्ति, इस जाति का प्रमुख निवास स्थान, भाषा-बोली, धर्म, वेशभूषा इत्यादि विषय में चर्चा किया गया है। इस के पश्चात नेवारी संगीत का परिचय दिया गया है। नेवारी संगीत के विषय में उपलब्ध पुस्तकें एवं विद्वानों के साथ साथ किए गए साक्षात्कार के आधार पर शोधार्थिनी ने नेवारी संगीत का मुख्य आधार संगीत दाफा संगीत को ही माना है, इसलिए इस विषय में थोड़ी विस्तार में चर्चा करने का प्रयास किया गया है। जिसके अंतर्गत दाफा संगीत का परिचय, उसकी उत्पत्ति, गायन शैली, इस गायन में प्रयोग किए जाने वाले शास्त्रीय राग एवं ताल की चर्चा की गई है। दाफा संगीत में प्रयोग होने वाले ग्वारा गायन तथा चालि गायन को परिचय देते हुए काठमांडू क्षेत्र के विभिन्न स्थान में उपलब्ध ग्वारा तथा चालि गीत का संकलन करके प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। नेवारी संगीत का मुख्य दाफा संगीत की चर्चा के पश्चात इस संगीत के अन्य गीत प्रकार नेवारी भजन, चर्या गीत, तुतः गीत, बारहमासे गीत तथा सामाजिक गीत प्रकार जिसके अंतर्गत मेलापर्व गीत, राजनैतिक गीत, स्वच्छन्द गीत इत्यादि के बारे में विवरण दिया गया है। इस अध्याय में शोधार्थिनी द्वारा विभिन्न गीत प्रकारों

की स्वरलिपियाँ(भातखण्डे स्वरलिपि के अनुसार) प्रस्तुत की गयी है ताकि शोध के मुख्य विषय को अधिक स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर पाए।

तृतीय अध्याय : नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्य एवं प्रयोग

इस अध्याय में नेवारी संगीत में प्रयुक्त विभिन्न वाद्यों के बारे में चर्चा की गयी है। सर्वप्रथम नेवारी संगीत में प्रयुक्त वाद्यों को शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत चार प्रकार तत्, अवनद्य, घन तथा सुषिर वाद्य में वर्गीकरण करके प्रत्येक वाद्य का वर्णन किया गया है। नेवारी संगीत में वाद्यों को एक विशेष स्थान दिया गया है, हरेक नेवारी चाड-पर्व, त्यौहार, जात्रा-उत्सव इत्यादि में वाद्य को अनिवार्य रूप में बजाया जाता है। हरेक पर्व के अनुरूप वाद्यों को बजाने का तरीका, अलग अलग वाद्यों का प्रयोग करना, यह विशेषता के रूप में देख सकते है। इसी को मध्य नज़र रखते हुए शोधार्थिनी द्वारा विभिन्न प्रकार के वाद्यों में उपलब्ध हुए वाद्य बोलों को संकलन करके प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

चतुर्थ अध्याय : विभिन्न उत्सव, नृत्य प्रकार एवं नाटकों में नेवारी संगीत

इस अध्याय में नेवारी संगीत को विभिन्न उत्सव, पर्वों में प्रयोग किए जाने के बारे में बताया गया है। नेवारी संगीत एवं जात्रा उत्सव का घनिष्ठ संबंध है। यह दोनों एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। इसलिए शोधार्थिनी द्वारा इस अध्याय में विभिन्न नेवारी समुदाय में मनाए जाने वाले कुछ मुख्य जात्रा-उत्सव के बारे में वर्णन के साथ उस उत्सव में नेवारी संगीत को प्रयोग के विषय में वर्णन करने का प्रयास किया गया है। नेवारी संगीत तथा वाद्यों के अतिरिक्त नृत्य एवं नाटकों का भी विशेष महत्व; नेवारी समाज में वर्तमान समय तक देखने को मिलता है। इसलिए इस अध्याय में नेवारी संगीत में प्रयोग होने वाले विभिन्न प्रकार के नृत्य एवं नाटक में प्रयोग होने वाले संगीत के बारे में चर्चा की गयी है।

पंचम अध्याय : वर्तमान समय में नेवारी संगीत की स्थिति एवं प्रयोग

इस अध्याय में वर्तमान समय में नेवारी संगीत के महत्व एवं प्रयोग के बारे में चर्चा की गई है। प्राचीन समय से मजबूती से चली आ रही नेवारी संगीत परंपरा को वर्तमान समय तक भी देखने और सुनने को मिलता है। नेवारी संगीत को और गहराई से जानने के लिए शोधार्थिनी द्वारा नेवारी संगीत में विशिष्ट श्रेणी प्राप्त गुरुओं, संगीतज्ञों के साथ साक्षात्कार करके उपलब्ध तथ्य एवं जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उसके पश्चात जनमानस में नेवारी संगीत की लोकप्रियता के बारे में चर्चा की गयी है। नेवारी समाज में प्राचीन गायन शैली के साथ साथ समय की माँग अनुसार अन्य गीत प्रकार भी प्रचलित हैं। उन

प्रचलित कुछ गीतों की स्वरलिपियाँ(भातखण्डे स्वरलिपि के आधार पर) भी शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

उपसंहार :

नेवारी संगीत एक लोक संगीत प्रकार है जो नेवारी जाति की पहचान के दर्पण स्वरूप मान सकते हैं। यह संगीत हरेक चाडपर्व एवं त्यौहारों में उत्साह उमंग को बढ़ाने के साथ साथ लोगों को जोड़ने का काम भी करता है। कोई भी देश की पहचान ही उस देश की कला संगीत एवं संस्कृति में छिपी होती है। देश की पहचान बढ़ाने में अन्य जाति के संगीत की तरह ही नेवारी संगीत का भी महत्वपूर्ण योगदान है। सम्पूर्ण उपलब्ध पुस्तकें, साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष अवलोकन के पश्चात शोधार्थिनी को यह प्रतीत हुआ है कि नेवारी संगीत के एक एक पहलु को यदि देखा जाए तो गायन शैली, विभिन्न वाद्य प्रकार इत्यादि में अलग अलग शोधकार्य हो सकता है। अपनी कला संगीत को और ज्यादा बढ़ावा देने के लिए स्थानीय तह से लेकर सरकारी निकायों का ध्यानाकर्षण होना अति जरूरी है। इस विषय में शोधकार्य करने वाले शोधार्थियों को बढ़ावा देकर अपनी संगीत को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षण एवं संवर्धन करना नितांत आवश्यक है ऐसा आभास शोधार्थिनी ने किया है।

(मोहन शोभा महर्जन)